IJAER/ January-February 2024/Volume-13/Issue-1 ISSN: 2278-9677
International Journal of Arts & Education Research

ग्रामीण आर्थिकी में सामुदायिक रेडियो की भूमिका

राजेन्द्र सिंह क्वीरा

शोधार्थी पत्रकारिता एण्ड जनसंचार, विभाग

मोनाड विश्विद्यालय हापुड़ (उ.प्र)

डा. गणेश शंकर (शोध निदेशक)

शोध सार-

सामुदायिक रेडियो एक मुख्य संचार माध्यम के रूप में प्रचलित है। सामुदायिक रेडियो अन्य रेडियो के प्रकारों के प्रतिद्वंदाता के रूप में स्थापित नहीं किया गया है, बल्कि एक सहयोगी रेडियो के रूप में स्थापित किया गया है। जो समुदायों को परस्पर संचार का अवसर प्रदान करता है। सामुदायिक रेडियो द्वारा उन पहलुओं को प्रकाश में लाने का प्रयास किया जाता है, जिससे वाणिज्यिक और सार्वजनिक रेडियो द्वारा कर नहीं किया जा रहा है। जैसे समुदायों को बिना किसी हस्तक्षेप के परस्पर संवाद का अवसर प्रदान करना, लोकतांत्रिक भावनाओं को और मजबूत बनाना यह देखा गया है कि एक सक्षम व्यक्ति अपनी बात को यदि दूसरों तक पहुंचाना चाहता है। इसके लिए उसके पास अनेक संचार मंच उपलब्ध हैं। किंतु एक निर्बल व्यक्ति या समुदाय अपनी बात को खाने के लिए आज प्रचलित विभिन्न संचार मंचों का प्रयोग करने में असमर्थ है। सामुदायिक रेडियो एक ऐसा मंच है जो दूरस्थ, कमजोर, गरीब, विद्यार्थी, कृषक इत्यादि वर्गों से संबंधित लोगों की बातों को एक मंच प्रदान करता है, जिससे जुड़कर वे अपने मुद्दों पर चर्चा कर सकते हैं। भारत विविधताओं का देश है, इसमें संस्कृति सभ्यता का एक अलग ही ताना-बना है। जो छोटेहैं हुए लिए को विविधता पर स्तर अलग-अलग बिल्कुल एक और हैं हुए बनते को लोगों में समुदायों - छोटे-। ऐसे विविध समुदायों को एक ही प्रकार की नीति नियमों के साथ में उन्नति की चरम सीमा तक पहुंचना एक बहुत ही जटिल कार्य है। ऐसे में सामुदायिक रेडियो एक अहम भूमिका का निर्वहन करता है। जो विविधता की गति को तीव्रता प्रदान करने में सक्षम भूमिका निभा रहा है और जमीनी स्तर पर होने वाले विभिन्न बाधक तत्वों या विकासात्मक मुद्दों पर उनके अपने विचारों को व्यक्त करने का अवसर प्रदान करता है। वह अपनी भाषा में समस्या के विशुद्ध स्वरूप को व्यक्त करने का अवसर देता है।

बीज शब्दः सामुदायिक रेडियो, संचार मंच, संस्कृति, ग्रामीण आर्थिकी, सूचना प्रसारण।

मूल शोधः

भौगोलिक दृष्टि से दुर्गमक्षेत्र उत्तराखंड में सामुदायिक रेडियो के रूप में एक ऐसे सशक्त संचार माध्यम की आवश्यकता है जो सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन एवं समुदाय को एक विकासात्मक मार्ग पर ले जाने की क्षमता रखता हो। उत्तराखण्ड की विशेष भौगोलिक व आर्थिक परिस्थितियों के दृष्टिगत शोध का व्यापक रूप दिया गया है। इस परिप्रेक्ष्य में अछूते पर्वतीय समाज को अध्ययन, स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं व शैक्षिक समस्याओं एवं सांस्कृतिक संरक्षण हेतु सामुदायिक रेडियो की अहम भूमिका पर शोध केन्द्रीत है। सामुदायिक रेडियो ग्रामीण पर्वतीय क्षेत्रों में एक विशाल क्षमता के उपकरण के रूप में संचार क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम के रूप में है। यह संचार क्षेत्र में सूचना प्रसारण शक्ति करण का प्रभावशाली ढंग से मूर्ति अमूर्त प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष रूप से समुदाय को लाभ पहुंचा रहा है। पर्वतीय समाज के कमजोर एवं निर्बल वर्ग जिन की आवाज दूर तक नहीं पहुंचती ऐसे में अपनी आवाज को बुलंद करने का एक माध्यम है। सामुदायिक रेडियो उभरता हुआ स्थानीय समुदाय संचार का श्रेष्ठ माध्यम है। समुदाय किसे कहा जाए इस पर विचार व्यक्त करते हुए लिखा गया है कि सामुदायिक रेडियो भौगोलिक आधार पर प्रतिष्ठित है। अर्थात एक इलाके विशेष में रहने वाले एक समुदाय को प्रत्याशी करता है। दूसरा वह समुदाय की रुचि जिसका विषय औसतन एक समान होता है। इन दो पहलुओं के आधार पर सामुदायिक रेडियो को स्थापित किया गया है वे समुदाय जो एक विशिष्ट इलाके में मौजूद हैं और वह एक सामान्य भाषा और प्रतीकों के अर्थ का निर्माण करें और इसलिए इनके आधार पर एक पहचान साझा करें या लाल

निर्मला 2015 में सामुदायिक रेडियो की भूमिका पर एक अध्ययन किया यह अध्ययन भारत के विषय विशेष संदर्भ में किया गया है। जो महिलाओं के बीच जागरूकता पैदा करता है और उन्हें जानकारी शिक्षा कौशल और जीवन शैली में सुधार व सामाजिक सांस्कृतिक राजनीतिक जागृति को बढ़ाने में सहायता देता है।

2. अध्ययन का नमूना

वर्तमान शोध में उद्देश्यपूर्ण प्रतिदर्श तकनीक द्वारा अध्ययन से चुने गए 1000 प्रतिदर्श शामिल हैं। जिन्हें उत्तराखण्ड के विभिन्न जनपदों जहां सामुदायिक रेडियो सेवायें उपलब्ध है से लिया गया है। जिसमें उत्तराखण्ड के पांच जनपदों का चयन किया गया है। जो कि देहरादूनए रूद्रप्रयाग, टिहरी गढ़वाल, उधमसिंह नगर, नैनीताल हैं। उत्तराखण्ड में जनसंख्या घनत्व कम होने के कारण सामुदायिक रेडियो की पहुंच जनांकिकी रूप से कम घनत्व की है। अतः प्रतिदर्श को विभिन्न क्लस्टरों में मैपिंग कर लिया गया है। सर्वेक्षण में यह दृष्टिगत हुआ है कि सामुदायिक रेडियो के प्रसारण की औसत रेंज 10 वर्ग किमी होती है परन्तु कार्यक्रमों को केवल सम्बंधित विषय में रूचि रखने वाले ही सुनते है। अतएव प्रतिदर्श लेते समय जनांकिकी क्षेत्र के आच्छादन को ध्यान में रखते हुए विभिन्न उत्तरदाताओं जैसे विद्यार्थी, किसान, गृहणी, श्रमिक वर्ग में विभाजित करते हुए कलस्टर मैपिंग की गयी है।

प्रतिदर्श औचित्यपूर्ण हो तथा निष्कर्ष की सार्थकता मापने योग्य हो, इसलिए प्रत्येक जनपद से रैण्डम आधा पर उत्तरदाताओं को लिया गया है।

चयनित अध्ययन क्षेत्र-

तालिका संख्या 1.0

शोध में शामिल उत्तरदाताओं की जानकारी-

प्रतिदर्श श्रेणीवार

नाम जनपद	सामुदायिक रेडियो का नाम	प्रसारण का मुख्य विषय	किसान	विद्यार्थी	गृहणी	श्रमिक	अन्य	कुल योग
देहरादून	हैलोदून	शैक्षिक उद्देश्य	40	80	55	20	05	200
टिहरी गढ़वाल	हैवलवाणी	सामुदायिक मुद्दे	45	40	65	30	20	200
नैनीताल	कुमाऊं वाणी	सामुदायिक मुद्दे	60	40	50	30	20	200
ऊधमसिंह नगर	जनवाणी	कृषि मुद्दें	70	35	50	40	05	200
रूद्रप्रयाग	मंदाकिनी की आवाज	सामुदायिक मुद्दे	45	50	55	20	30	200
कुल =								1,000

N=1000

शोध में शामिल उत्तरदाताओं की जानकारी-

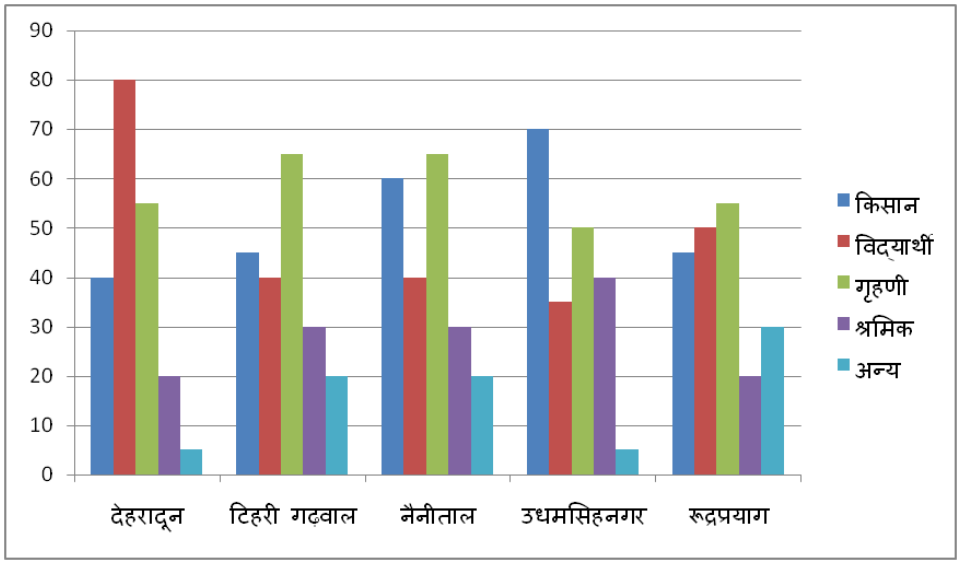

2.1 शोध उपकरण

समुदाय में सामुदायिक रेडियो स्टेशन की श्रोताओं की संख्या का आंकलन करने और क्षेत्र विशिष्ट सामुदायिक रेडियो स्टेशन को सुनने वाले और न सुनने वाले परिवारों की पहचान करने के लिए नमूना गांव में परिवारों की सूची तैयार की गई थी। प्रश्नावली सर्वेक्षण का उपयोग सामुदायिक रेडियो स्टेशन सुनने और न सुनने वाले परिवारों से सामुदायिक रेडियो स्टेशन के विभिन्न पहलुओं पर जानकारी प्राप्त करने के लिए किया गया था। सामुदायिक रेडियो स्टेशन से उनकी धारणाओं और अपेक्षाओं को समझने के लिए समुदाय के संसाधन व्यक्तियों/सामुदायिक रेडियो स्टेशन के स्वयं सेवकों, सामान्य रूप से समुदाय के सदस्यों और श्रोता क्लब के सदस्यों के साथ फोकस समूह चर्चाएं आयोजित की गईं। सामुदायिक रेडियो स्टेशन की प्रभावशीलता को प्रतिबिंबित करने वाली रुचि की प्रासंगिक कहानियों का पता लगाने के लिए केस अध्ययन किए गए। सामुदायिक रेडियो स्टेशन के प्रदर्शन में अंतर्दृष्टि प्राप्त करने के लिए इनके सअध्ययनों का विश्लेषण किया गया और रिपोर्ट में अनुकरणीय साक्ष्य के रूप में उद्धृत किया गया।

2.2 आंकड़ों का विश्लेषण–

विभिन्न आयु वर्गों के अनुसार सामुदायिक रेडियो का प्रयोग–

क्र.सं.	आयु वर्ग	मनोरंजन के लिए	विषय विशेषज्ञों से मार्ग दर्शन के लिए	खुद को प्रोत्साहित करने के लिए
01	18 वर्ष से नीचे	83%	72%	62.1%
02	19 से 25 तक	81.29%	84%	92.43%
03	26 से 35 तक	96.24%	87.74%	90.90%
04	36 से ऊपर	97.33%	98.68%	96%

N=950

उपरोक्त तालिक एवं आरेख के क्रम संख्या 01 के अनुसार 18 वर्ष से कम आयु वर्ग के उत्तरदाता 83 प्रतिशत सामुदायिक रेडियो का प्रयोग मनोरंजन के लिए करते हैं। 72 प्रतिशत विषय विशेषज्ञों से मार्ग दर्शन के लिए उपयोग करते है। 62.1 प्रतिशत खुद

को प्रोत्साहित करने के लिए करते है। 19 से 25 वर्ष आयु वर्ग के उत्तरदाता 81.29 प्रतिशत मनोरंजन के लिए 84 प्रतिशत विषय विशेषज्ञों से मार्ग दर्शन के लिए व 92.43 प्रतिशत खुद को प्रोत्साहिक करने लिए उपयोग करते है। 25 से 35 आयु वर्ग के उत्तरदाता 96.24 प्रतिशत मनोरंजन के लिए 87.74 प्रतिशत विषय विशेषज्ञों से मार्ग दर्शन के लिए व 90.90 प्रतिशत खुद को प्रोत्साहित करने के लिए उपयोग करते है। 35 वर्ष से ऊपर 97.33 प्रतिशत मनोरंजन के लिएए 98.64 प्रतिशत विषय विशेषज्ञों से मार्ग दर्शन के लिएए 96 प्रतिशत खुद को प्रोत्साहित करने के लिए प्रयोग करते है। लिंग के आधार पर उत्तरदाताओं की आवृत्ति व प्रतिशत का वितरण निम्नलिखित तालिका में प्रदर्शित है।

उत्तरदाताओं का लिंग के आधार पर वर्गीकरण

उत्तरदाताओं का लिंग के आधार पर वर्गीकरण	आवृत्ति	प्रतिशत
स्त्री	813.3	81.33
पुरुष	186.7	18.67
कुल योग	1,000	100

N-950

कथन	हां %	नहीं %	कभी-कभार %
सामुदायिक रेडियो कृषि को महत्वपूर्ण जानकारी देता है	73	5	22
कृषि कार्यक्रम जलवायु परिवर्तन के अनुसार होते हैं.	75	10	15
यह महिलाओं के स्वास्थ्य से संबंधित कार्यक्रमों को महत्व देता है.	68	13	19
सामुदायिक रेडियो कार्यक्रम महिला सशक्तिकरण कार्यक्रमों को महत्व देते हैं.	73	10	17
सामुदायिक रेडियो कार्यक्रम स्वास्थ्य संबंधी शंकाओं का समाधान देते हैं.	66	13	21
मुझे डॉक्टरों के लाइव प्रोग्राम से लाभ मिलता है.	56	18	26
सामुदायिक रेडियो कार्यक्रम पशुपालन संबंधी समस्याओं का समाधान पाने में मदद कर रहे हैं.	58	19	23
यह बाल कल्याण को महत्व देता है.	67	8	25
सामुदायिक रेडियो में प्रसारित होने वाले छात्रोन्मुख कार्यक्रम सुने जाते हैं.	62	17	21
सामुदायिक रेडियो आपकी क्षेत्रीय समस्याओं पानी), चिकित्सा और अन्यहै करता बात में बारे के (	46	31	23
यह रोजगार के अवसर प्राप्त करने में मदद करता है.	69	8	23

सामुदायिक रेडियो के माध्यम से सरकार की नई योजनाओं की जानकारी मिलती है.	77	8	15
सामुदायिक रेडियो में प्रसारित चिकित्सा युक्तियाँ उपयोगी हैं.	57	10	33
सामुदायिक रेडियो के माध्यम से सामान्य जानकारी ज्ञात होती है.	68	8	24
सामुदायिक रेडियो के माध्यम से सामान्य ज्ञान का विकास हो रहा है.	60	7	33
सामुदायिक रेडियो के माध्यम से नई जानकारी मिलती है.	69	7	24
सामुदायिक रेडियो मुझे अपना व्यक्तिगत कौशल विकसित करने में मदद करता है.	50	19	31
सामुदायिक रेडियो के माध्यम से हमारे क्षेत्र के बाजार भाव एवं जलवायु की जानकारी मिलती है.	69	12	19

- ग्रामीण समुदायों पर समुदायिक रेडियो स्टेशनों का प्रभाव,
- श्रोताओं का वितरण,
- क्षेत्र आधारित

सामुदायिक रेडियो स्टेशन के श्रोता गाँवों में बहुत अधिक हैं। इससे साफ है कि गाँवों में लोगों को सामुदायिक रेडियो के कार्यक्रमों का बहुत पसंद है।

शहरी क्षेत्रों में भी सामुदायिक रेडियो के श्रोता हैं, लेकिन उनका अंश कुछ कम है।

श्रोताओं का वितरण, लिंग आधारित

सामुदायिक रेडियो के श्रोता में महिलाओं का प्रतिशत बहुत अधिक है। यह दिखाता है कि महिलाएँ खासकर सामुदायिक रेडियो के कार्यक्रमों को पसंद करती हैं और उन्हें उनकी जरूरतों के अनुसार तैयार किया जाता है।

श्रोताओं का वितरण, आर्थिक स्थिति

सामुदायिक रेडियो के श्रोता की आर्थिक स्थिति विविध है। कुछ लोग अच्छे आर्थिक स्थिति में हैं, जबकि कुछ अधिक गरीब हैं। इससे सामग्री को उनकी जरूरतों और संदेश को ध्यान में रखते हुए उत्कृष्ट, समर्पित बनाने की जरूरत होती है।

श्रोताओं का वितरण, शैक्षिक स्थिति

श्रोताओं की शैक्षिक स्थिति भी विविध है। कुछ लोगों की शैक्षिक स्थिति उच्च हैए जबकि कुछ लोग माध्यमिक या निम्न हैं। यह दिखाता है कि शिक्षा के स्तर परिवेश के लोगों के बीच विभिन्न हो सकते हैं। समुदायिक रेडियो स्टेशन विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक परिवर्तन और विकास के लिए शक्तिशाली उपकरण के रूप में प्रकट हो चुके हैं।

3. सामुदायिक रेडियो के प्रभाव का विश्लेषण-

3.1 कृषि और आय में सुधार:

किसानों के साथ एक अध्ययन में कृषि प्रथाओं पर महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव प्रकट हुआ। उदाहरण के लिए ,समुदायिक रेडियो स्टेशन को नियमित रूप से सुनने के बाद ,किसानों ने सिफारिश की गई कृषि तकनीकों का अपनाया ,जैसे कम पेस्टिसाइड का उपयोग ,उचित सिंचाई प्रबंधन , और समय पर उर्वरकों का उपयोग। इसके परिणामस्वरूप ,फसल का उत्पादन बढ़ा और किसानों के लिए अतिरिक्त आय की संभावनाएं बढ़ गई।

- रेडियो कार्यक्रम सुनने से पहले ,किसानों की आमतौर पर प्रति एकड़ चावल की उत्पादन 2000-1500 किलोग्राम थी।
- समुदायिक रेडियो पर सुझाए गए तकनीकों को अपनाने के बाद ,जैसे कि बोने की अंतराल को 25-20 दिनों 14 से 15 दिनों में कम करना ,किसानों ने उत्पादन में 20 से 25 प्रतिशत की वृद्धि देखी।

4 .स्वास्थ्य और कल्याण:

सुनने वालों के साथ साक्षात्कार ने स्वास्थ्य से संबंधित व्यवहारों में योगदान के विशेष सुधारों का उल्लेख किया। कई व्यक्तियों ने रेडियो कार्यक्रमों के सुनने के बाद सकारात्मक परिवर्तन रिपोर्ट किया। उदाहरण के लिए ,एक प्रतिभागी ने एक रेडियो कार्यक्रम द्वारा सुझाए गए व्यायाम योजनाओं का पालन करने के बाद घुटने के दर्द में काफी कमी देखी। एक अन्य सुनने वाला एनीमिया के बारे में अधिक जागरूक हो गया और नियमित रूप से आयरन के गोलियों का सेवन करना शुरू किया ,जिससे स्वास्थ्य में सुधार हुआ।

- रेडियो कार्यक्रमों द्वारा सुझाए गए व्यायाम तंत्रों का पालन करने के बाद व्यक्तियों में घुटने के दर्द में काफी कमी आई।
- एनीमिया के बारे में जागरूकता बढ़ी ,जिससे लोगों ने नियमित आयरन सप्लीमेंट्स का सेवन किया और स्वास्थ्य सूचकांकों में सुधार देखा।

5 .बच्चों की वृद्धि और विकास -

- माताओं ने रोजमर्रा की जिंदगी में रेडियो कार्यक्रमों से प्राप्त सलाह को अपनाने के बाद अपने बच्चों की वृद्धि और विकास में संतोष व्यक्त किया। एक मां ने रेडियो पर प्रदान की गई पोषण सलाह का पालन करने के बाद अपने बच्चे का वजन में धीरे-धीरे वृद्धि देखी। ऐसी हस्तक्षेप से समुदाय के बच्चों के कुल कल्याण और विकास में योगदान हुआ।
- माताओं ने अपने बच्चों की वजन में धीरे-धीरे वृद्धि का अनुभव किया ,जब उन्होंने रेडियो कार्यक्रमों से प्राप्त आहार संबंधित सिफारिशों को अपनाया।
- पोषण-आधारित पहलों में भाग लेने वाले बच्चों के वजन में अवधि के दौरान 2 किग्रा की वृद्धि देखी गई।

6 .बाजार सूचना तक पहुँच -

- समुदायिक रेडियो स्टेशन ग्रामीण समुदायों को बाजार सूचना प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। विशेष रूप से ,किसान बाजार कीमतों पर समय पर अपडेट प्राप्त करने का लाभ उठाते हैं ,जिससे उन्हें फसल की खरीददारी और बिक्री के बारे में सूचित निर्णय लेने में मदद मिलती है। साथ ही ,सरकारी योजनाओं और सब्सिडीज़ के बारे में जानकारी का प्रसारण भी होता है ,जिससे किसानों को विभिन्न सहायता कार्यक्रमों का लाभ उठाने में सहायता मिलती है।
- किसानों ने समुदायिक रेडियो के माध्यम से बाजारी दरों पर समय पर अपडेट प्राप्त करके किसानों ने फसलों की बिक्री और खरीदी के बारे में सूचित निर्णय लिए।
- रेडियो कार्यक्रमों से जानकारी प्राप्त करने वाले किसानों की सरकारी योजनाओं और सब्सिडीज़ में बढ़ी हिस्सेदारी देखी गई।

7 .सशक्तिकरण और सामाजिक सद्भावना -

- निष्कर्ष रूप से ,समुदायिक रेडियो ग्रामीण समुदायों में सशक्तिकरण और सामाजिक सद्भावना को बढ़ावा देते हैं। समुदाय सहभागिता और बहस के लिए एक मंच प्रदान करके ,यह व्यक्तियों को अपनी चिंताओं को आवाज़ देने और निर्णय लेने में सक्रिय बनाता है। इसके

अलावा ,रेडियो कार्यक्रमों को सुनने का साझा अनुभव सामुदायिक बंधों को मजबूत करता है और समुदाय के सदस्यों के बीच आत्मविश्वास को बढ़ावा देता है।

- सामुदायिक रेडियो प्लेटफ़ॉर्मों द्वारा संचालित संवाद और निर्णय-निर्माण प्रक्रियाओं में समुदाय के सदस्यों की सक्रिय भागीदारी।
- सुनने वालों के बीच साझा अनुभव और समाजिक बंधों का मजबूतीकर, सामुदायिक एकता और सशक्तिकरण का संरक्षण करने में महत्वपूर्ण योगदान।

समाप्त में ,समुदायिक रेडियो स्टेशन ग्रामीण क्षेत्रों में सकारात्मक परिवर्तन के लिए प्रेरित के रूप में काम करते हैं ,विभिन्न सामाजिक-आर्थिक चुनौतियों का सामना करते हैं ,और समूचे समुदाय के विकास में योगदान करते हैं। उनकी भूमिका ज्ञान के प्रसारण ,व्यवहारिक परिवर्तन को प्रोत्साहित करना ,और समुदायों को सशक्त करना है जो उन्हें स्थायी विकास की पहल के मूल्यवान संपत्ति के रूप में महत्वपूर्ण बनाता है।

8 .सामुदायिक रेडियो सेवाः एक दृष्टि

- लोगों के लिए सामुदायिक रेडियो स्टेशन (सीआरएस) के सुनने के तीन प्रमुख कारक हैं। पहला है अच्छा संगीत ,जो लोगों को मनोरंजन प्रदान करता है। दूसरा कारक नई जानकारी है ,जो लोगों को शिक्षित करता है और उन्हें अपने समुदाय के महत्वपूर्ण मुद्दों के बारे में सूचित करता है। तीसरा कारक है रेडियो स्टेशन के प्रस्तुतकर्ता ,जो उनके साथ जुड़े रहते हैं और उनके लिए पसंदीदा होते हैं।
- अध्ययन क्षेत्र में जो लोग सीआरएस को सुनते हैं ,उनमें से अधिकांश (%63) ने बताया कि वे इसे दैनिक आधार पर सुनते हैं। यह दिखाता है कि यह स्थायी रूप से उनके जीवन का हिस्सा बन चुका है।
- लोगों को आमतौर पर सीआरएस के सिग्नल और कार्यक्रमों की गुणवत्ता से संतुष्टि है। उन्हें लगता है कि यह रेडियो चैनल उनकी आवश्यकताओं और पसंदों को ध्यान में रखते हुए सबसे बेहतरीन सेवा प्रदान करता है।

9 . सामुदायिक रेडियो स्टेशन) सीआरएस (न सुनने का कारण

- लगभग 45 प्रतिशत लोगों के लिए इसका मुख्य कारण यह है कि उन्हें सीआरएस के बारे में पूरी तरह से पता नहीं था। यह उन लोगों को सीआरएस की अनुपस्थिति के बारे में जानकारी नहीं मिलने के कारण हो सकता है जो इसका सीधा असर है।
- कुछ लोग अन्य रेडियो स्टेशनों को अधिक पसंद करते हैं ,या फिर उनके पास सीआरएस की अन्य सुनने की विकल्प नहीं होती।

निष्कर्ष

उपरोक्त डेटा के आधार पर ,सामुदायिक रेडियो स्टेशनों के प्रभाव का सारांश निम्नलिखित रूप में किया जा सकता है: सामुदायिक रेडियो स्टेशनों ने गाँवों और शहरों के लोगों के जीवन में आम तौर पर सकारात्मक परिणाम दिखाए हैं। कृषि ,स्वास्थ्य ,बच्चों की विकास और सामाजिक जनसांख्यिकीय प्रोफ़ाइल के क्षेत्रों में सुधार के कई मामले साक्षात्कर्ताओं और उनके साक्षात्कारों द्वारा दर्ज किए गए हैं। ये साकारात्मक परिणाम विभिन्न सामुदायिक रेडियो कार्यक्रमों के माध्यम से सामुदायिक जीवन में संचार किए जाने वाले सूचनाओं और उपायों के प्रसारण से संबंधित हैं। इस अध्ययन का एक मुख्य निष्कर्ष यह है कि सामुदायिक रेडियो स्टेशनों का उपयोग सामुदायिक विकास के लिए एक महत्वपूर्ण साधन हो सकता है ,खासकर ग्रामीण और छोटे शहरी क्षेत्रों में जहाँ अन्य माध्यमों की पहुंच कम होती है। यहाँ तक कि यह उन लोगों तक पहुंच सकता है जो दूरदराज क्षेत्रों में रहते हैं ,जिन्हें बाह्य जानकारी और साथ ही अपनी समस्याओं का हल तलाशने में मदद की जरूरत होती है। इस तरह ,सामुदायिक रेडियो स्टेशनों को अधिक संदर्भों में प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और इनके विकास और प्रसारण को बढ़ावा दिया जाना चाहिए ,ताकि वे समुदायों की सबसे आवश्यक जरूरतों को पूरा करने में मदद कर सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची-

1.विकिपीडिया रेडियो का इतिहास फरवरी 9,2015

2. एन.सी. पन्त एवं मनीषा द्विवेदी पत्रकारिता एवं जन संचार.

3. विकिपीडिया रेडियो इन इण्डिया.

4. डा. देवव्रत सिंह एफ.एम. से हुआ रेडियो का पुनर्जन्म न्यूजराईटर्स इन

5. मुक्त ज्ञान कोश विकिपीडिया- सामुदायिक रेडियो

6. पत्रकारिता एवं जनसंचार पाठ्य पुस्तिका यू.ओ.यू. हल्द्वानी, संस्करण 2014

7. भारत सरकार (2016), भारत 2016. दिल्ली, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय।

8. ज़िविन, जे. (1998), आयरन लेक्चरर का इमेजिनेड रेजिन, विलेज ब्रॉडकास्टिंग इन कॉलोनियल इंडिया, आधुनिक एशियाई अध्ययन, 32(3), 717-738।

12. Community Radio in India, R. Shreedher, Pooja O. Murada 1 July 2019 Aakar Books

13. Community Radio for Rural Development, Arpita Sharma, LAP Lambert Academic Publishing.

14. कम्युनिटी रेडियो, मनोज कुमार, आलेख प्रकाशन, दिल्ली।